

वैदिक दर्शन - पशुपति दर्शन

द्विःख-निरोध मार्ग

महात्मा बुद्ध की शिक्षा

Page No.

Date

Alanta

को सादर उनके पार
आने वाली में समझा है। दुःखों का निरोध
करीब आने वाले में बहलाना गया है। लेकिन
दुःखों का निरोध किस प्रकार संभव
है इस प्रश्न का उत्तर पशुपति दर्शन में
में बहलाना गया है और इस मार्ग को
दुःख निरोध मार्ग कहा गया है। इस मार्ग
में दुःखों का अन्त बहलाना गया है और
महानि मार्ग पर चलकर अन्तिम निर्विकल
को प्राप्त करना है। इस मार्ग को
अष्टांग मार्ग कहा जाता है।

① समग्र दृष्टि - बुद्ध ने दुःख का मूल कारण
अविद्या को माना है। बुद्ध का कहना है कि
"Ignorance is the root cause of
Suffering" इसलिए दुःख को दूर करने
के लिए अविद्या को नाश देना अनिवार्य
आवश्यक है। इस लिए बुद्ध ने कहा है कि दुःख
दूर करने के लिए भिन्ना दृष्टि को दूर करना
है। भिन्ना दृष्टि का अन्त समग्र दृष्टि
से ही संभव है।

2) समग्र संकल्प - बुद्ध का कहना है कि
केवल सौंदर्य के लिए प्राप्त करने से
निर्विकल की प्राप्ति नहीं हो सकती।
इस लिए दृढ़ संकल्प होकर अपने लक्ष्य

की और बढ़ना पड़ेगा। निवारण प्राप्ति के लिए
साध्य है, जो इन्फ्लेमिंग विचारों से अलग रहने
इसके के उचित उद्देश्य है। हिंसा के
विचारों को लागू करने का संकल्प
ही सम्मत् संकल्प है। इसमें लागू और
परिष्कार की आवश्यकता नहीं है।

(3) सम्मत् वाक्य — सम्मत् वाक्य सम्मत् संकल्प
की अभिव्यक्ति है। इसे अपने वाक्य पर
निर्भर रखना होगा। गुरु, निम्न, उच्च
अभिन्न वाक्य से बनना होगा। अपने जीवन
के लिए अच्छे विचारों को बोलकर भी
उत्तर देना चाहिए। आवश्यकता से अभिन्न
नहीं बोलना चाहिए।

(4) सम्मत् कर्म — महत्वा गुरु का कर्म है।
सर्व माता और पिता माता के साथ
अच्छे कर्म भी करना चाहिए। अभिन्न के
पक्ष में ही होगा है। इसलिए सभी
सम्मत् कर्मों को पालन करने चाहिए।
सम्मत् के इच्छा को वही में करना
आदि, इच्छा संयम, अहिंसक आदि भी
सम्मत् कर्म है।

(5) सम्मत् आजीविका — गुरु में इसका
अर्थ है मानवता से जीवन पालन करना
वर्तमान है। इसके अनुसार (सम्मत् के
दिग्दर्शन, धार्मिक, गुरु, अहिंसक आदि
गुरु कर्मों को भी वही विवेक का सम्मत्
वही बनाना चाहिए।)

(6) संस्कृत नाम — विकारी प्राप्ति के लिए मनुष्य को लगातार प्रयास करने पड़ता है। पुराने गुरे भाव पूरी तरह नष्ट हो जाते। फिर से मन में गुरे भाव नहीं आते। मन अच्छे विचारों से भर रहा इसके लिए मनवरत प्रयास जारी रहे। इस ही संस्कृत नामों के नाम से जाना जाता है।

(7) संस्कृत स्मृति — इसका अर्थ है कि वही बात सुनने वाले बाद बाद स्मरण करता है। भूल जाने से काम में कमी नहीं पड़ती है। संस्कृत स्मृति के द्वारा वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में जागृत रहना। अतः नाशवान वस्तुओं की स्मृति ही संस्कृत स्मृति है।

(8) संस्कृत समाधि — उद्धृष्ट कहता है कि उपर वर्णित बातों पर ध्यान के बाद मनुष्य में इतनी शक्ति आ जाती है कि समाधि का स्थान लगा सकता है। बौद्ध दर्शन में समाधि के बाद सात वर्षों तक जीवित रहता है।

(क) समाधि व प्रथम अवस्था में संस्कृत स्मृति से प्राप्त शक्तियों पर ध्यान देना प्रारम्भ है।

ख) दूसरी अवस्था में तब और निरन्तर की भावनाओं को नहीं रह जाती है।

ग) इस अवस्था में मानस की प्राप्ति में उदासीनता आ जाती है।

घ) इस अवस्था में आराधन और भक्ति

का भी सम्बन्ध हो जाता है। यह सम्बन्ध
द्वन्द्व-द्वन्द्व से होते हैं। सम्बन्धों
के दो महत्वपूर्ण भागों को

प्रकार, शक्ति और सम्बन्ध नामक तीन
भागों में विभाजित किया जाता है।

आइए इस प्रकार हम कहें

- कहते हैं कि जिन कारणों से कुछ
उत्पन्न होता है उन कारणों को प्रत्यक्ष
कारण के रूप में ही निर्धारित किया
जाता है। इस लिए वेदों में अनेक
आयतों में कुछ विशेष भागों
कहा जाता है।